

पाठ – 4 औद्योगीकरण का युग

संक्षेप में लिखे

Q1. निम्नलिखित की व्याख्या करें-

(क) ब्रिटेन की महिला कामगारों ने स्पिनिंग जेनी मशीनों पर हमले किए।

(ख) 17 वीं शताब्दी में यूरोपीय शहरों के सौदागर गांव में किसानों और कारीगरों से काम करवाने लगे।

(ग) सूरत बंदरगाह 18 वीं सदी के अंत तक हाशिए पर पहुंच गया था।

(घ) ईस्ट इंडिया कंपनी ने भारत में बुनकरों पर निगरानी रखने के लिए गुमाशतों को नियुक्त किया था।

उत्तर- (क) ब्रिटेन में महिला श्रमिकों ने स्पिनिंग जेनी पर हमला किया क्योंकि इसने कताई प्रक्रिया को गति दी, और परिणामस्वरूप, श्रम की मांग कम हो गई। इससे ऊनी उद्योग में काम करने वाली महिलाओं में बेरोज़गारी का एक वैध डर पैदा हो गया। अब तक, वे हाथ से कताई करने से बच गए थे, लेकिन इसे नई मशीन द्वारा खराब कर दिया गया था।

(ख) सत्रहवीं शताब्दी में, यूरोप के शहरों के व्यापारियों ने गाँवों के भीतर किसानों और कारीगरों को नियुक्त करना शुरू कर दिया क्योंकि शक्तिशाली व्यापार गिल्ड की उपस्थिति के कारण शहरी क्षेत्रों में उत्पादन नहीं बढ़ाया जा सकता था। ये उत्पादन, नियंत्रित कीमतों और प्रतिस्पर्धा पर नियंत्रण बनाए रखते थे और व्यापार में नए लोगों के प्रवेश को प्रतिबंधित करते थे। एकाधिकार भी एक सामान्य रणनीति थी। ग्रामीण इलाकों में, ऐसे कोई नियम नहीं थे, और गरीब किसानों ने इन व्यापारियों का स्वागत किया।

(ग) भारत के साथ व्यापार में यूरोपीय कंपनियों की बढ़ती शक्ति के कारण अठारहवीं शताब्दी के अंत तक सूरत के बंदरगाह में गिरावट आई। उन्होंने स्थानीय अदालतों से कई रियायतें हासिल कीं और साथ ही व्यापार के एकाधिकार को भी हासिल किया। इसके कारण सूरत और हुगली के पुराने बंदरगाहों में गिरावट आई, जहां से स्थानीय व्यापारियों ने काम किया था। निर्यात धीमा हो गया और यहां के स्थानीय बैंक दिवालिया हो गए।

(घ) कपड़ा कारोबार में मौजूदा व्यापारियों और दलालों से मुक्त होकर बुनकरों पर अधिक प्रत्यक्ष नियंत्रण स्थापित करने के लिए ईस्ट इंडिया कंपनी ने भारत में बुनकरों की निगरानी के लिए गोमाता की नियुक्ति की। गोमस्त वे सवेतन सेवक थे जो बुनकरों की निगरानी करते थे, आपूर्ति एकत्र करते थे और कपड़े की गुणवत्ता की जांच करते थे। गोमास्थों ने यह सुनिश्चित किया कि कपड़ा उद्योग के सभी प्रबंधन और नियंत्रण अंग्रेजों के अधीन आ गए। इससे प्रतिस्पर्धा को खत्म करने, लागत को नियंत्रित करने और कपास और रेशम उत्पादों की नियमित आपूर्ति सुनिश्चित करने में मदद मिली।

Q2. प्रत्येक वक्तव्य के आगे सही या गलत लिखें -

(क) 19 वीं सदी के आखिर में यूरोप की कुल श्रमशक्ति का 80% तकनीकी रूप से विकसित

औद्योगिक क्षेत्र में काम कर रहा था।

(ख) 18 वीं सदी तक महीन कपड़े के अंतरराष्ट्रीय बाजार पर भारत का दबदबा था।

(ग) अमेरिकी गृह युद्ध के फलस्वरूप भारत के कपास निर्यात में कमी आई।

(घ) फ्लाई शटल के आने से हथकरघा कामगारों की उत्पादकता में सुधार हुआ।

उत्तर- (क) असत्य (ख) सत्य (ग) असत्य (घ) सत्य

Q3. पूर्व-औद्योगिककरण का मतलब बताएं ?

उत्तर- पूर्व -औद्योगिकीकरण औद्योगिकीकरण का वह चरण है जो कारखाने प्रणाली पर आधारित नहीं था। कारखानों के आने से पहले, एक अंतरराष्ट्रीय बाजार के लिए बड़े पैमाने पर औद्योगिक उत्पादन था। औद्योगिक इतिहास के इस भाग को पूर्व-औद्योगिकीकरण के रूप में जाना जाता है।

चर्चा करें

Q1. 19वीं सदी के यूरोप में कुछ उद्योगपति मशीनों के हाथ से काम करने वाले श्रमिकों को प्राथमिकता क्यों देते थे?

उत्तर- उन्नीसवीं शताब्दी के इंग्लैंड के कुछ उद्योगपतियों ने मशीनों पर हाथ से काम करना पसंद किया क्योंकि बाजार में कोई श्रमिक कमी नहीं थी, और परिणामस्वरूप, उच्च मजदूरी लागतों की कोई समस्या नहीं थी। उद्योगपति ऐसी मशीनों के साथ हाथ श्रम को बदलना नहीं चाहते थे, जिनके लिए बड़े पूँजी निवेश की आवश्यकता होगी। इसके अलावा, जिन उद्योगों में उत्पादन और आवश्यक श्रम की मात्रा मौसमों पर निर्भर थी, वहाँ हाथ श्रम को उसकी कम लागत के लिए पसंद किया गया था। इसके अलावा, कई सामान केवल हाथ से निर्मित किए जा सकते थे। मशीनें एक समान उत्पाद की बड़े पैमाने पर मात्रा प्रदान कर सकती हैं। लेकिन मांग जटिल डिज़ाइन और आकार के लिए थी; इसके लिए मानव कौशल की आवश्यकता थी, न कि यांत्रिक तकनीक की। हस्तनिर्मित उत्पाद भी शोधन और वर्ग की स्थिति के लिए खड़े थे। आमतौर पर यह माना जाता था कि मशीन-निर्मित सामान कालोनियों के निर्यात के लिए थे।

Q2. ईस्ट इंडिया कंपनी ने भारतीय बुनकरों से सूती और रेशमी कपड़े की नियमित आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए क्या किया ?

उत्तर- राजनीतिक शक्ति स्थापित करने के बाद, ईस्ट इंडिया कंपनी ने भारतीय बुनकरों से विभिन्न प्रकार के कार्यों के माध्यम से सफलतापूर्वक सूती और रेशमी वस्त्रों की नियमित आपूर्ति की। इन कार्यों का उद्देश्य अन्य औपनिवेशिक शक्तियों से प्रतिस्पर्धा को समाप्त करना, लागत को नियंत्रित करना और ब्रिटेन के लिए कपास और रेशम के सामानों की नियमित आपूर्ति सुनिश्चित करना था। सबसे पहले, इसने बुनकरों की देखरेख, आपूर्ति इकट्ठा करने और कपड़ा गुणवत्ता की जांच करने के लिए गोमस्त या सशुल्क नौकर नियुक्त किए। दूसरे, इसने कंपनी के बुनकरों को अन्य खरीदारों से निपटने से रोक दिया। बुनकरों को

कच्चे माल की खरीद के लिए अग्रिम देने की प्रणाली द्वारा यह पता लगाया गया था। जो लोग इन ऋणों को लेते थे, वे अपना कपड़ा किसी और को नहीं बेच सकते थे, लेकिन गोमास्थों को।

Q3. कल्पना कीजिए कि आप को ब्रिटेन तथा कपास के इतिहास के बारे में विश्वकोश के लिए लेख लिखने को कहा गया है। इस अध्याय में दी गई जानकारियों के आधार पर अपना लेख लिखिए।

उत्तर- ब्रिटेन और कपास का इतिहास सत्रहवीं और अठारहवीं शताब्दी के दौरान, व्यापारी कपड़ा उत्पादन में ग्रामीण लोगों के साथ व्यापार करते थे। एक कपड़ा एक ऊन स्टेपलर से ऊन खरीदता है, इसे स्पिनरों तक ले जाता है, और फिर, उत्पादन के आगे के स्तरों के लिए यार्न को बुनकरों, फुलर और खरीदारों के पास ले जाता है। इन सामानों के लिए लंदन परिष्करण केंद्र था। ब्रिटिश निर्माण के इतिहास में इस चरण को प्रोटो-औद्योगिकीकरण के रूप में जाना जाता है। इस चरण में, कारखाने उद्योग का एक अनिवार्य हिस्सा नहीं थे। इसके बजाय जो मौजूद था वह वाणिज्यिक आदान-प्रदान का एक नेटवर्क था। कारखानों के नए युग का पहला प्रतीक कपास था। उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में इसका उत्पादन तेजी से बढ़ा। कच्चे कपास का आयात 1760 में 2.5 मिलियन पाउंड से बढ़कर 1787 में 22 मिलियन पाउंड हो गया। कॉटन मिल और नई मशीनों के आविष्कार और एक छत के नीचे बेहतर प्रबंधन के कारण ऐसा हुआ। 1840 तक, औद्योगिकीकरण के पहले चरण में कपास प्रमुख क्षेत्र था। कपड़ा उत्पादन क्षेत्र में अधिकांश आविष्कार श्रमिकों द्वारा अवहेलना और घृणा के साथ किए गए क्योंकि मशीनों ने कम श्रम और रोजगार की कम जरूरतों को निहित किया। द स्पिनिंग जेनी एक ऐसा ही आविष्कार था। ऊनी उद्योग में महिलाओं ने विरोध किया और इसे नष्ट करने की मांग की क्योंकि यह श्रम बाजार में अपनी जगह ले रहा था। इस तरह की तकनीकी प्रगति से पहले, ब्रिटेन ने बड़ी संख्या में भारत से रेशम और कपास का सामान आयात किया। भारत से ललित वस्त्र इंग्लैंड में उच्च मांग में थे। जब ईस्ट इंडिया कंपनी ने राजनीतिक शक्ति प्राप्त की, तो उन्होंने ब्रिटेन के लाभ के लिए भारत में बुनकरों और कपड़ा उद्योग का शोषण किया। बाद में, मैनचेस्टर कपास उत्पादन का केंद्र बन गया। इसके बाद, भारत को ब्रिटिश कपास वस्तुओं के प्रमुख खरीदार के रूप में बदल दिया गया। प्रथम विश्व युद्ध के दौरान, ब्रिटिश कारखाने युद्ध की जरूरतों को पूरा करने में बहुत व्यस्त थे। इसलिए, भारतीय वस्त्रों की मांग एक बार फिर बढ़ गई। ब्रिटेन में कपास का इतिहास मांग और आपूर्ति के ऐसे उतार-चढ़ाव से भरा हुआ था।

Q4. पहले विश्व युद्ध के समय भारत का औद्योगिक उत्पादन क्यों बढ़ा ?

उत्तर- प्रथम विश्व युद्ध के दौरान भारत में औद्योगिक उत्पादन में वृद्धि हुई क्योंकि ब्रिटिश मिलें युद्ध की जरूरतों को पूरा करने में व्यस्त हो गईं। मैनचेस्टर आयात में कमी आई, और भारतीय मिलों को अचानक आपूर्ति करने के लिए एक बड़ा घर बाजार था। बाद में, उन्हें जूट बैग, सेना की वर्दी के लिए कपड़ा, टेंट, चमड़े के जूते, काठी और अन्य सामानों की आपूर्ति करने के लिए कहा गया। इतनी मांग थी कि पुराने कारखानों को कई शिफ्टों में चलाने पर भी नए कारखाने लगाने पड़े। नए श्रमिकों और लंबे समय तक काम के घंटों के साथ औद्योगिक उत्पादन में उछाल आया।

परियोजना कार्य

Q1. अपने क्षेत्र में किसी एक उद्योग को चुनकर उसके इतिहास का पता लगाएँ। उसकी प्रौद्योगिकी किस तरह बदली? उसमें मज़दूर कहाँ से आते हैं? उसके उत्पादों का विज्ञापन और मार्केटिंग किस

तरह किया जाता है? उस उद्योग के इतिहास के बारे में उसके मालिकों और उसमें काम करने वाले कुछ मज़दूरों से बात करके देखिए।

उत्तर- छात्र स्वयं करें।